वफा

श्री नुसरत इजहार सिद्दीकी
आशुलिपिक वर्ग - द्वितीय

जिन्दगी को जिन्दगीभर जिन्दी का गम रहा,
अब जिन्दगी ही पूछती है हम से, कुछ समझे, जिन्दगी क्या है ?

करते हैं दावाए वफा हम उन पर,
जिनको मालूम ही नहीं वफा क्या है ।
दस्तूर ही कुछ ऐसा है जमाने का ऐ दोस्त,
तड़पता है कोई किसी के लिए ।

हमको है चाह उनकी और वो बेपरवाह,
उसको मालूम नहीं हो रहा क्या है ।
आखिर कब तक जियेंगे इस उम्मीद पे हम,
कि कब वो समझेंगे कि मुद्दआ क्या है ।

***

नजरिया

मार्ग में थक कर जो रुक जायेगा,
वह लक्ष्य से अपने बहुत दूर हो जायेगा ।

आप इसको देखा न करें इस कदर घूर के,
यह शीशा है और घमन्डी हो जायेगा ।

यह उजाला जिसे जाने महफिल कहें,
उसके आते ही दूर हो जायेगा ।

एक खुशी है कि वह मिल गया है मुझे,
एक गम है कि फिर दूर हो जायेगा ।

अब जो भी हो अंजाम इसका, गम नहीं,
जो भी होना है मेरा वह हो ही जायेगा ।

***